दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारी।
अनाथनाथे अंबे करुणा विस्तारी।
वारी वारी जन्म मरणाते वारी।
हारी पडलो आता संकट निवारी।
जयदेवी जयदेवी जय महिषासुर मथनी।
सुरवर ईश्वरवरदे तारक संजिवनी।
जयदेवी जयदेवी .....॥ घृ॥

त्रिभुवन भुवनी पाहता तुज ऐसी नाही। चारी श्रमले परंतु न बोलवे काही। साही विवाद करीता पडिले प्रवाही। तें तू भक्तालागी पावसी लवलाही। जयदेवी जयदेवी .....॥ १॥

प्रसन्न वदने प्रसन्न होसी निजदासां।
क्लेशापासुनी सोडी तोडी भवपाशा।
अंबे तुजवाचून कोण पुरविल आशा।
नरहरी तल्लीन झाला पदपंकज लेशा।
जयदेवी जयदेवी .....॥ २॥

॥ ॐ प्रणव रुपिणीम् वन्दे ॥

चारी = चारही वेद

साही = सहा शास्त्रे किंवा दर्शन